संपादकीय

भारत की स्कूली शिक्षा करोड़ों विद्यार्थियों और लाखों शिक्षकों के साथ एक वृहत् व्यवस्था के रूप में सामने आती है। छोटे-छोटे कई देशों की शिक्षा-व्यवस्था भारत के किसी एक बड़े राज्य में समाई-सी प्रतीत होती है। ऐसी विशालकाय व्यवस्था में पाठ्यचर्या की रूपरेखा से शुरू करते हुए पाठ्यक्रमों और अन्य पाठ्यचर्या सामग्रियों के निर्माण की एक सुगठित प्रक्रिया से निकल कर स्कूली शिक्षा पाठ्यचर्या के रूप में स्कूलों में लागू की जाती है। स्कूल के शिक्षकों, प्रबोध कों और प्रबंधकों सभी की ज़िम्मेदारी होती है कि सभी बच्चों तक गुणवत्ता शिक्षा की पहुँच हो सके।

इसके लिए समय-समय पर केंद्र समर्थित योजनाओं, जैसे–सर्वशिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान इत्यादि को लागू किया जाता है। अब तो कक्षा एक से आठवीं तक मुफ्त और ज़रूरी शिक्षा के अधिकार का कानून भी बन गया है।

इन सभी प्रयासों के बाद भी हमारी शिक्षा-व्यवस्था में बहुत-सी कमियाँ हैं। कक्षाओं में अभी भी शिक्षण का तरीका शिक्षक और पाठ्यपुस्तक आधारित है। बहु-भाषिकता, बच्चों के स्वरों और अनुभवों की स्कूल और कक्षा में जगह नहीं है। बच्चे समझने से ज़्यादा रटने के तरीके अपनाते हैं। कुछ ऐसा परिदृश्य आज से लगभग सौ साल पहले की भी शिक्षा व्यवस्था में होगा तभी तो शायद कवि गुरु रवींद्रनाथ टैगोर के अनुवादित लेख- 'शिक्षा में हेर-फेर' (अनुवादक-विश्वनाथ नरवणे) में वही चिंता झलकती है जो आज की स्कूली व्यवस्था में महसूस की जा रही है। कवि गुरु के विचारों से सहमति रखने वाली विदूषी महिला मार्जरी साइक्स ने भी अपने शैक्षिक विचारों से सामयिक स्कूली-व्यवस्था को प्रभावित किया। उनके विचार और व्यक्तित्व के आयामों का विवरण देता हुआ अनिल सेठी का लिखा लेख- 'शिक्षा- सादगी, सौंदर्य और समानता के लिए' भी इस अंक में हमारे पाठकों के लिए शामिल किया गया है।

शिक्षा व्यवस्था की कमियों और समस्याओं के लिए किसे ज़िम्मेदार ठहराया जाए? इसका जवाबदेह कौन है? उषा शर्मा ने इस मुद्दे को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है 'जवाबदेही: किसकी और क्यों' नामक लेख में। शिक्षा के पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण, तकनीकियों और प्रणालियों पर प्रकाश डालते हुए लेख भी हमें प्राप्त हुए हैं। इन लेखों में ऋषभ कुमार मिश्र का लेख 'बच्चे और पर्यावरण: पर्यावरण शिक्षा के शिक्षाशास्त्रीय आयाम'; तारकेश्वर गुप्ता का लेख 'बी.एड. विद्यार्थियों का प्रशिक्षण के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति

का अध्ययन'; विजय जायसवाल का लेख 'दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में आईसीटी की उपादेयता' तथा अर्चना दूबे और महेन्द्र पाटीदार द्वारा लिखित लेख –'भूमिका नर्वाह प्रतिमान द्वारा पर्यावरणीय शिक्षा' इस अंक में शामिल किये गए हैं।

शिक्षा एक ऐसा विषय है जिसमें दार्शनिक, राजनीतिक, समाजशास्त्रीय आदि सभी प्रकार के चिंतन शामिल किये जाते हैं। शायद यही कारण है कि हमारी इस शैक्षिक पत्रिका के लिए हमें विभिन्न विषयों पर लेख प्राप्त होते हैं और हम यह मानकर, कि शिक्षा का दायरा बहुत विस्तृत है, उन्हें यथासंभव शामिल भी करते हैं। इस अंक में निरंजन सहाय द्वारा लिखित लेख 'आत्म मुग्धता के समान्तर संवेदनशील पाठ' कविता विधा की विशेषताओं को सामने रखता है और शंकर शरण द्वारा लिखे लेख 'डॉ. अम्बेदकर की राजनीतिक विरासत' में डॉ. अम्बेदकर की राजनीतिक विरासत के कम चर्चित पक्षों पर चर्चा की गई है।

वर्तमान में पुस्तक पढ़ने का शौक कम होता जा रहा है। कभी समय की कमी को दोष दिया जाता है तो कभी इंटरनेट को। शरद सिन्हा और अलका ने अपने लेख ' सफरनामा कागज़ से स्क्रीन तक' के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि समय के साथ-साथ किस प्रकार मुद्रित किताबों से आज हम ई-किताबों तक आ पहुँचे हैं और दिनोदिन ई-किताबों को पढ़ने में पाठकों की दिलचस्पी बढ़ती जा रही है।

इस अंक में हमने जितेन्द्र सिंह पाटीदार की एक पुस्तक समीक्षा शामिल की है। इन्होंने 'प्रयोगात्मक शिक्षा मनोविज्ञान' नामक पुस्तक की समीक्षा की है।

आशा है हमारी नव वर्ष की भेंट आपको पसंद आएगी।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित

अकादमिक संपादकीय समीति